संगीत के पारिभाषिक शब्द

संगीत

– "गीतं वाद्यं नृत्यं च त्रयं संगीत मुच्यते"

गीत वाद्य व नृत्य तीनों का सम्मिलित रूप संगीत है। वस्तुतः तीनों विद्याएँ एक दूसरे की सहायक हैं इनमें गीत की प्रधानता मानी जाती है गायन के अनुकूल वाद्यों का निर्माण आदिम काल से होता आया है तथा गीत के भावों का अभिनय युक्त प्रदर्शन नृत्य की संज्ञा पाता है, ललित कलाओं में संगीत का सर्वश्रेष्ठ स्थान है। हर युग में संगीत, संस्कृति का साथी रहा है।

संगीत कला भौतिक उत्कर्ष व यश, प्रसिद्धि के साथ आध्यात्मिक उन्नति का भी साधन रही है। भारत

में भक्ति की सभी शाखाओं में संगीत को महत्व दिया गया है। प्राचीन काल में इसे 'गंधर्व' शब्द प्राप्त था 'सामवेद' पूर्णतः संगीत मयी रचना है तथा 'गंधर्व वेद' इसका उपवेद माना जाता है। नाद साधना इसकी विषयवस्तु है।

भारत में दो प्रकार की संगीत पद्धतियाँ प्रचलित हैं–

1. उत्तरभारतीयसंगीत पद्धति
2. दक्षिणभारतीयसंगीत पद्धति

वर्तमान में संगीत की अनेक शाखाएँ तथा उनमें रोजगार के अवसर है। मनोविज्ञान, चिकित्सा, कृषि पर्यटन, समाज विज्ञान व मनोरंजन आदि क्षेत्रों में संगीत की उपयोगिता सर्वविदित है।

नाद

शास्त्रीय व्याख्या –

"नकारं प्राणनामानं, दकारं नलं बिदुः
जातप्राणाग्नि संयोगात्तेन नादो भिधीयते"
– संगीतरत्नाकर

नाद की रेखीय आवृत्ति

'न' अर्थात् प्राण,वायु एवं 'द' अर्थात् अग्नि के परस्पर संयोग से नाद की उत्पत्ति मानी जाती है। सम्पूर्ण जगत नाद मय है। जड़, चेतन, चर, अचर सर्वत्र नाद की सत्ता है। हमारे चारों ओर व्याप्त असंख्य ध्वनियों में से नियमित आवृत्ति युक्त ध्वनियाँ जो संगीत हेतु उपयोगी हैं नाद कहलाती है।

नाद के दो भेद हैं–

1. आहत नाद
2 अनाहत नाद

– जो नाद किन्हीं दो वस्तुओं के परस्पर घर्षण, आघात द्वारा उत्पन्न होते हैं वह आहत नाद है। संगीत में नाद के इसी स्वरूप का उपयोग होता है।

– अनाहत नाद स्वयं भू(स्वयं उत्पन्न) ध्वनि है। योगी, महात्मा, संत, ऋषि अनहद की साधना करते हैं, नाभि से निरन्तर बिना आघात की ध्वनि गुंजायमान होती है इसी की अनुभूति योग में अनहत नाद कहलाती है यह संगीतोपयोगी नहीं है।

सरल विवेचना – किसी भी वस्तु या पदार्थ में आघात या घर्षण से कम्पन, आंदोलन उत्पन्न होते हैं ये कम्पन्न दो प्रकार के होते हैं – नियमित (नाद) अनियमित (शोर या कोलाहल)

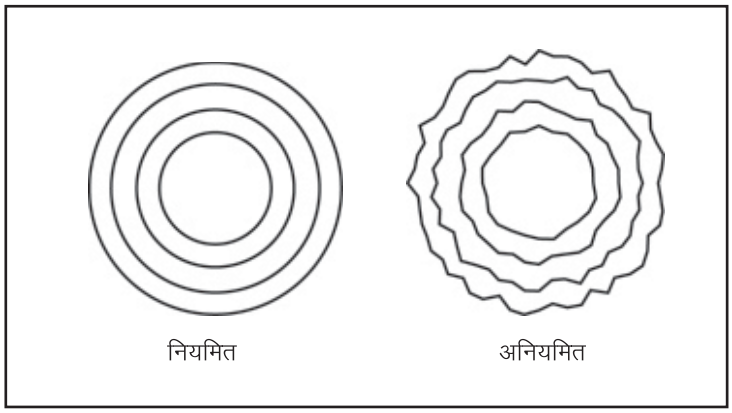

नियमित कम्पन्न मधुर, व संगीतोपयोगी होते हैं शास्त्र में इसे ही नाद कहा जाता है अनियमित आंदोलन कर्णकटु व श्रोता को कष्टदायी होते हैं, इसे शोर, कोलाहल या रव कहते है। उदाहरण –

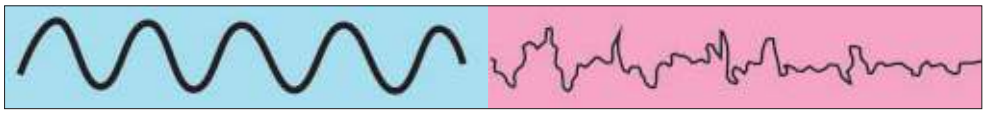

संगीत उपयोगी ध्वनि कोलाहल / शोर

श्रुति

शास्त्रीय व्याख्या –

शास्त्रों में कहा गया है– "श्रुयते इति श्रुतिः" अर्थात् जो कानों तक सुनाई दे वह श्रुति है। 'श्रु' अर्थात् श्रवण करना। पं. भातखंडे ने श्रुति की व्याख्या को और अधिक स्पष्ट किया है–

नित्यं गीतोपयोगित्वम मिज्ञेयत्वमप्युत।
लक्ष्ये प्रोक्तं सुपर्याप्तं संगीत श्रुति लक्षणम्।।
– अभिनव राग मंजरी

अर्थात् ऐसी ध्वनियाँ जो गायन में उपयोगी हो तथा एक दूसरे से पृथक्–पृथक् की जाती हो श्रुति कहलाती है। शास्त्र में इनकी संख्या 22 मान्य है।

सरल विवेचना – पूर्व में नाद की व्याख्या की गई है। संगीतोपयोगी ध्वनियां (नाद) असंख्य है। लेकिन एक निश्चित आवृत्ति से उसकी दुगुनी आवृत्ति के मध्य जिन नादों के ऊँचे नीचेपन को स्पष्ट महसूस कर सकें वह श्रुति है। अर्थात् नाद समूह में से स्पष्टतः अलग–अलग महसूस की जाने वाली ध्वनियां श्रुति कहलाती हैं। उदाहरण –

उक्त उदाहरण में वैज्ञानिक रूप से तो सभी नाद अलग–अलग हैं लेकिन प्रयोग करने पर 100 व 101 के अंतर को मनुष्य के कान अलग नहीं कर पाते अतः जिस दूरी पर पहले नाद / ध्वनि को दूसरे नाद / ध्वनि से कान अलग कर पाएँ (उदाहरण में–100 107,113,119,125....) वह ध्वनि श्रुति है।

उदाहरण –

दैनिक जीवन में हम बाजार से सामग्री क्रय करते है। इलेक्ट्रिक तराजू पर 1000 ग्राम 1001 ग्राम अलग–अलग दिखाई देंगे लेकिन हाथ तराजू पर दोनों वजन समान है। हाथ तराजू पर एक तरफ इतना वजन बढ़ाएँ कि 1000 ग्राम से अलग दिखाई दे यह स्थिति संभवतः 1004–1005 ग्राम पर आएगी। बस प्रथम 1000 ग्राम अवस्था व 1005 ग्राम अवस्था नाद में श्रुति को स्पष्ट करती है।

स्वर

शास्त्रीय व्याख्या – श्रुत्यंतर मावित्वं यस्यानुरणनात्मकः। संगीत दर्पण

अर्थात् श्रुति में अनुरणन / गूँज / नियमित स्थिरता स्वर की कारक है। स्वर मधुर व कर्णप्रिय होते है। नियमित व स्थिर आंदोलन वाली ध्वनियाँ स्वर कहलाती है। श्रुतियों की समूह रूप में स्थापना अथवा श्रुतियों में से अंतराल पर चयनित ध्वनियाँ स्वर है। एक सप्तक में सात शुद्ध व पाँच विकृत स्वर, कुल 12 स्वर होते हैं। स्वरों की उत्पत्ति का एक मत पशु–पक्षियों को मानता है। एक अन्य मत मानव शरीर के यौगिक चक्रों अर्थात् स्वर उत्पत्ति मानता है।

स्वर	पूरा नाम	उत्पत्ति
सा	षड्ज	मोर
रे	ऋषभ	चातक
ग	गांधार	बकरा
म	मध्यम	कौआ
प	पंचम	कोयल
ध	धैवत	मेंढ़क
नि	निषाद	हाथी

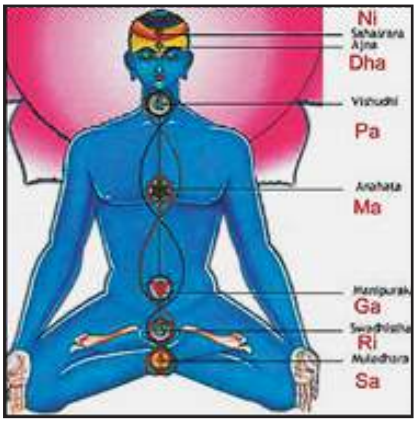

स्वरों की यौगिक स्थिति

सरल विवेचना – संगीत कला हेतु 'स्वर' एक आवश्यक तत्व है। स्वर की उत्पत्ति का कारक 'श्रुति' है। स्वर व श्रुति का गहरा सम्बन्ध है। सुप्त अवस्था में नाद श्रुति है तथा संगीत में उपयोग लेने के दौरान स्वर कहलाती है। इन्हें उक्त रेखाओं द्वारा समझा जा सकता है।

नाद में श्रुति का आरेख

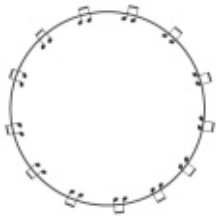

श्रुति में से स्वर का आरेख

भारतीय संगीत में एक समय में कम से कम 5 व अधिकतम 7 ध्वनियाँ प्रयोग में लेते है। प्रयोग में आने वाली ध्वनियां स्वर है शेष श्रुति है।

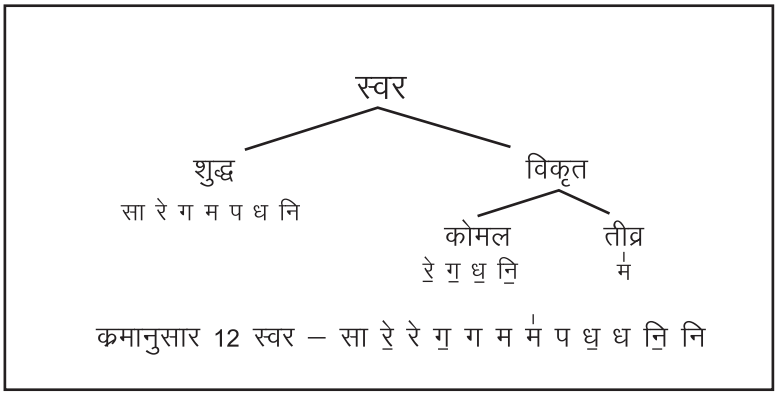

सप्तक

शास्त्रीय व्याख्या –निश्चित श्रुति अंतराल पर क्रमानुसार सात स्वरों का समूह सप्तक कहलाता है। 22 श्रुति में विद्वानों ने सात शुद्ध व 5 विकृत स्वरों की स्थापना की है। प्राचीन काल में सप्तक को ग्राम कहा जाता था। इसके विकास का एक सुदीर्घ इतिहास है। शास्त्रों में मंद्र, मध्य व तार तीन सप्तकों का उल्लेख मिलता है। आवश्यकतानुसारअतिमंद्र व अतितारसप्तकों का प्रयोग किया जाता है।

मन्द्र सप्तक – नीचे बिन्दी, मध्य सप्तक – कोई चिन्ह नहीं, तार सप्तक – ऊपर बिन्दी

सरल विवेचना – सात स्वरों के समूह को सप्तक कहते है। सप्तक तीन होते हैं– मन्द्र, मध्य और तार। मध्य सप्तक अर्थात् हमारी साधारण बोली में जब हम बातचीत/या गायन करते हैं, तब हमारी ध्वनि की तारता मध्य सप्तक में होती है।

मध्य सप्तक से नीचे जिस सीमा तक हमारी आवाज पहुँचे, वह मन्द्र सप्तक है। अर्थात् प्रयास पूर्वक गंभीर/भारी या अंतः स्थल की ध्वनि निकालना इन्हें मन्द्र सप्तक के स्वर कहा जाता है।

मध्य निषाद से ऊपर जिस सीमा तक हमारी आवाज जाती है, उन स्वरों को तार सप्तक के स्वर कहा जाता है। अर्थात् जोर देकर ऊँचे स्वरों में गायन करना।

मन्द्र– प्रयास पूर्वक गंभीर ध्वनि निकालना

मध्य– साधारण ध्वनि में गायन

तार– जोर देकर ऊँचे स्वरों में गायन

आरोह

आरोह शब्द "रोहण" का एक रूप है। अर्थात् ऊपर जाने का क्रम, चढ़ते क्रम में। संगीत में स्वरों का नीचे से ऊँचे स्वरों की ओर जाने की क्रिया आरोह कहलाती है। ध्वजारोहण, अश्वारोहण अश्वारोही आदि ..... जैसे – सा रे ग म प ध नि सां।

अवरोह

अवरोह अर्थात् अवरोहण, नीचे जाने का क्रम, उतरना आदि। ऊँचे स्वर से नीचे स्वर की ओर उतरने की क्रिया अवरोह कहलाती है। जैसे – सां नि ध प म ग रे सा ।

महत्वपूर्ण बिन्दु

1. गीत, वाद्य व नृत्य – तीनों कलाओं का समावेश संगीत है।
2. नाद : संगीतोपयोगी ध्वनियों का समूह। भेद– आहत व अनाहत।
3. श्रुति : एक–दूसरे से अलग स्पष्ट पहचानी जाने योग्य ध्वनियाँ इनकी संख्या 22 मानी जाती है।
4. स्वर : स्थिर व कर्णप्रिय ध्वनि। संख्या सात – सा रे ग म प ध नि।
5. सप्तक : सात स्वरों का समूह। तीन भेद– मन्द्र, मध्य व तार।
6. आरोह : स्वरों का नीचे से ऊपर चढ़ना। यथा – सा रे ग म।
7. अवरोह : स्वरों का ऊपर से नीचे उतरना । यथा – सां नि ध प।

अभ्यासार्थ प्रश्न

बहुवैकल्पिक प्रश्न –

1. संगीत में कौन से तत्व समाहित है–
   ((अ) गायन (ब) वादन (स) नृत्य (द) उपरोक्त सभी
2. नाद कितने प्रकार के होते है–
   (अ) 4 (ब) 3 (स) 2 (द) 1
3. संगीत में श्रुतियों की संख्या मानी जाती है–
   (अ) 20 (ब) 22 (स) 25 (द) 30
4. मोर से किस स्वर की उत्पत्ति मानी गई है–
   (अ) षड्ज (ब) मध्यम (स) पंचम (द) निषाद
5. सप्तक में शुद्ध स्वरों की संख्या है–
   (अ) 5 (ब) 6 (स) 7 (द) 8

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. नाद की परिभाषा देते हुए इसके भेद समझाइये।
2. श्रुति व स्वर में अन्तर स्पष्ट कीजिये।
3. श्रुति की परिभाषा दीजिये।
4. स्वर किसे कहते है।
5. आरोह व अवरोह को समझाइये।

उत्तरमाला बहुवैकल्पिक प्रश्न

1. द 2. स 3. ब 4. अ 5. स